Series ΣHEFG

SET ~ 4

प्रश्न–पत्र कोड
Q.P. Code **39**

रोल नं.
Roll No.

परीक्षार्थी प्रश्न–पत्र कोड को उत्तर–पुस्तिका के मुख–पृष्ठ पर अवश्य लिखें ।
Candidates must write the Q.P. Code on the title page of the answer-book.

- कृपया जाँच कर लें कि इस प्रश्न–पत्र में मुद्रित पृष्ठ **15** हैं ।
- प्रश्न–पत्र में दाहिने हाथ की ओर दिए गए प्रश्न–पत्र कोड को परीक्षार्थी उत्तर–पुस्तिका के मुख–पृष्ठ पर लिखें ।
- कृपया जाँच कर लें कि इस प्रश्न–पत्र में **5** प्रश्न हैं ।
- **कृपया प्रश्न का उत्तर लिखना शुरू करने से पहले, उत्तर–पुस्तिका में प्रश्न का क्रमांक अवश्य लिखें ।**
- इस प्रश्न–पत्र को पढ़ने के लिए 15 मिनट का समय दिया गया है । प्रश्न–पत्र का वितरण पूर्वाह्न में 10.15 बजे किया जाएगा । 10.15 बजे से 10.30 बजे तक परीक्षार्थी केवल प्रश्न–पत्र को पढ़ेंगे और इस अवधि के दौरान वे उत्तर–पुस्तिका पर कोई उत्तर नहीं लिखेंगे ।
- Please check that this question paper contains **15** printed pages.
- Q.P. Code given on the right hand side of the question paper should be written on the title page of the answer-book by the candidate.
- Please check that this question paper contains **5** questions.
- **Please write down the serial number of the question in the answer-book before attempting it.**
- 15 minute time has been allotted to read this question paper. The question paper will be distributed at 10.15 a.m. From 10.15 a.m. to 10.30 a.m., the candidates will read the question paper only and will not write any answer on the answer-book during this period.

भारत की ज्ञान परंपराएँ और पद्धतियाँ

KNOWLEDGE TRADITIONS AND PRACTICES OF INDIA

निर्धारित समय : **3** घण्टे
Time allowed : **3** hours

अधिकतम अंक : **70**
Maximum Marks : **70**

निर्देश : ***सभी*** *प्रश्नों के उत्तर दीजिए ।*

Instruction : *Attempt* ***all*** *questions.*

सामान्य निर्देश :

- *अपने उत्तर देने से पहले प्रश्नों को दो या तीन बार सावधानीपूर्वक पढ़िये ।*
- *मात्र उत्तर-पुस्तिका भरने की कोशिश मत कीजिए बल्कि अपने विचारों को स्पष्ट रूप से व्यक्त करने की कोशिश कीजिए ।*
- *पाठ्य-पुस्तक के वही शब्द दोहराने की आवश्यकता नहीं है बल्कि विचारों और अवधारणाओं को स्पष्ट रूप से समझना अधिक महत्वपूर्ण है ।*
- *जहाँ भी उल्लेख किया गया हो शब्द-सीमा को ध्यान में रखना है ।*

भाग - क

1. नीचे दिये गये अनुच्छेद को पढ़ें और उसके नीचे दिये गये प्रश्नों का उत्तर दें : **5 × 2 = 10**

भारत वास्तव में मंदिरों के देश के रूप में प्रसिद्ध है । इनमें से अनेक मंदिर, विशेषकर जो प्राचीन और मध्य काल में बनाये गये हैं, अपनी वास्तुशिल्पीय और मूर्तिकला की उत्कृष्टता के कारण प्रसिद्ध हैं । हिंदू मंदिर वास्तुकला को मोटे तौर पर नागर या उत्तर भारतीय शैली, द्रविड़ या दक्षिण भारतीय शैली, और इन दोनों के मिले-जुले रूप अर्थात् वेसर शैली के नामों से वर्गीकृत किया गया है । भारत के प्रत्येक क्षेत्र में पत्थरों और अन्य सामग्रियों की उपलब्धता और जलवायु दशाओं तथा अन्य कारकों ने मंदिर वास्तुकला की अनोखी शैलियों को जन्म दिया ।

प्रारंभ में, मंदिर छोटे आकार के बनाये जाते थे जिसमें केवल एक गर्भ गृह या कक्ष होता था जिसमें मुख्य देवता को स्थापित किया जाता था । समय के साथ-साथ बड़े मंदिर परिसरों का विकास हुआ जिनके देवस्थानों की वास्तुकला और प्रकोष्ठों में अधिक निखार आने लगा । इसके परिणामस्वरूप विभिन्न शैलियों के मंदिरों का निर्माण हुआ परंतु इस निर्माण में कुछ सामान्य अवधारणाओं और विशेषताओं को यथावत् बनाये रखा गया :

- गोपुर : एक बड़ा प्रवेश द्वार जो विशेषकर दक्षिण भारतीय मंदिरों में सामान्यतः मीनार (टावर) के रूप में होता है ।
- जगती (भूमि) : जिस स्थान पर मंदिर निर्माण किया जाता है ।
- मण्डप : धार्मिक अनुष्ठान, प्रवचन अथवा कला प्रदर्शन सहित लोक कार्यक्रमों के लिए स्तंभों वाला खुला सभागार ।

General Instructions :

- *Read the questions carefully* ***two*** *or three times before attempting your answers.*
- *Do not try to fill up space; try to express your thoughts clearly instead.*
- *You need not repeat the exact words of the textbook; it is the clear understanding of concepts and ideas which matters more.*
- *Respect word length wherever it is indicated.*

SECTION-A

1. Read the passage given below and answer the questions that follow :

5 × 2 = 10

India is justly famous as a land of temples. Many of these temples, especially those belonging to the ancient and medieval ages, are renowned on account of their architectural and sculptural excellence. Hindu temple architecture has broadly been classified as Nāgara or the north Indian style, Drāviḍa or the south Indian style, and Vesara which contains elements of both. Each region of India has given rise to a unique style of temple architecture due to the availability of stone and other material and in keeping with the climatic conditions and other factors.

Initially, temples were made as small shrines with possibly only the central sanctum sanctorum or the main cell enshrining the principal deity. Over time, they evolved into bigger temple complexes, with more sculptures and niches enshrining deities. Eventually, temples evolved into various styles, but those remained based on certain common concepts and features :

- gopura : an elaborate gateway, especially in South Indian temples, generally in the form of a tower;
- jagatī (literally, 'earth'): the platform on which the temple is erected.
- mandapa : an open pillared hall for public events, including rituals, discourses or art performances;

- अंतराल : मण्डप और गर्भगृह के बीच एक उपकक्ष या बैठक
- गर्भगृह : गर्भगृह जिसमें अधिष्ठाता (प्रमुख) देवता को स्थापित किया जाता है ।
- शिखर (उत्तर भारतीय मंदिरों में) या विमान (दक्षिण भारतीय मंदिरों में) : गर्भगृह के ऊपर की मीनार ।

गुप्त साम्राज्य काल में गुफा मंदिरों और एक ही पत्थर से बने मंदिरों की खुदाई की परंपरा का विकास ईंट और पत्थरों वाले मंदिरों के निर्माण में होने लगा । इसके दो कारण हैं । एक कारण यह था कि जहाँ वास्तुकार और मूर्तिकार गुफा मंदिर केवल उस स्थान पर बना सकते थे जहाँ पाषाण या पहाड़ उपलब्ध थे, जबकि इमारती मंदिर किसी भी चुने गये स्थान पर ईंटों या खान से निकाले गये पत्थरों और उनकी ढुलाई करके बनाये जा सकते थे । दूसरा कारण यह था कि ऐसे मंदिर बनाते समय वास्तुकला और मूर्तिकला के नये रूपों और परीक्षणों के लिये और अधिक गुंजाइश थी ।

होयसल राजवंश के राजाओं का, जिन्होंने दक्षिण कर्नाटक और कुछ समय के लिये तमिलनाडु के कुछ हिस्सों में भी शासन किया, मंदिर कला और वास्तुकला में अत्यधिक योगदान रहा । उनके बहुत ही अद्वितीय ताराकृति मंदिर, जो अधिकतर सिलखड़ी (soap stone) से बने हैं, सैकड़ों सूक्ष्म मूर्तियाँ उकेर कर सुसज्जित हैं । सर्वाधिक महत्वपूर्ण होयसल मंदिर, बेलूर (1117 में निर्मित), हलेबिड (इसका निर्माण 1118 में शुरू हुआ) और सोमनाथपुरा (13वीं शताब्दी) में हैं ।

उपर्युक्त अनुच्छेद के संदर्भ में निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर दें : (प्रत्येक **2** अंक)

(i) गुफा मंदिरों और एक ही पत्थर (एकाश्म) से बने मंदिरों की खुदाई-परंपरा क्यों धीरे धीरे कम हो गई ?

(ii) होयसल राजवंश की मंदिर वास्तुकला का उल्लेख करें ।

(iii) हिंदू मंदिर वास्तुकला का क्या वर्गीकरण किया गया है ?

(iv) वह कौन से कारक हैं जिनसे भारत के विभिन्न क्षेत्रों में मंदिर वास्तुकला की विभिन्न शैलियों का जन्म हुआ ?

(v) मंदिर परिसरों की किन्हीं चार विशेषताओं का उल्लेख करें ।

- antarāla : an antechamber between the maṇḍapa and the garbhagṛha;
- garbhagṛha : the sanctum sanctorum, where the presiding deity is installed;
- śikhara (for north Indian temples) or vimāna (for South Indian Temple) : the tower over the garbhagṛha.

In the Gupta age, the tradition of excavating cave temples and monolithic shrines evolved into the construction of brick and stone temples. This was due to two reasons. One reason was that while the architects and sculptors could create a cave temple only where boulders or hills were available, a structural stone temple could be created at any chosen site by baking bricks or quarrying and transporting stones. Secondly, there was more scope for architectural and sculptural innovation and experimentation while constructing a temple.

The kings of the Hoysāla dynasty, who ruled over South Karnataka and for some time over parts of Tamil Nadu as well, contributed immensely to temple art and architecture. Their very unique star-shaped temples, mostly built of soft soap stone, are profusely decorated with hundreds of minute sculptures. The most important Hoysāla temples are at Belur (constructed in 1117), Halebid (its construction commenced in 1118) and Somanathapura (13th century).

Answer these questions in relation to above passage. (**2** marks each)

(i) Why did tradition of excavating cave temples and monolithic shrines gradually diminish ?

(ii) Describe the temple architecture of Hoysāla dynasty.

(iii) What is the classification for Hindu temple architecture ?

(iv) What are the factors that led to different style of temple architecture in parts of India ?

(v) Mention any four features of temple complexes.

2. नीचे दिये गये अनुच्छेद को पढ़ें और उसके नीचे दिये गये प्रश्नों के उत्तर दें : **5 × 2 = 10**

नृत्य पर अभी भी उपलब्ध प्रथम ग्रंथ भरत मुनि का नाट्यशास्त्र (लगभग दूसरी सदी ई.पूर्व) है । इसमें नृत्य का स्पष्ट और विस्तृत वर्णन किया गया है । नाटक की प्रथम प्रस्तुति को देखने के बाद जैसा कि नाट्यशास्त्र में बताया गया है, भगवान शिव चाहते थे कि नृत्य और नृत्य संचालन को नाटक का एक अंग बनाया जाए और उसके लिए ऋषि तण्डु से नृत्य की रचना और निर्देशन का अनुरोध किया गया । तण्डु ने भरत मुनि को नृत्य संचालनों, (भंगिमाओं) अर्थात् चारी (पद संचालन या पैर और टांगों की स्थिति), मण्डलों (परिवृत्त संचलन), करन्यास (हस्त संचालन) और अंगहार (नृत्य भंगिमाओं) की शिक्षा दी जिसने इन्हें नाटक (अभिनय) में अभिनेताओं और नर्तकों के प्रशिक्षण का हिस्सा बनाया । इस नृत्य को तांडव कहा जाने लगा जो भाव के अनुरूप देह भंगिमा की एक शृंखला है और भारतीय नृत्य की मूल भाषा है ।

नाट्यशास्त्र के बाद नृत्य पर दूसरा महत्वपूर्ण उपलब्ध ग्रंथ नंदिकेश्वर का अभिनय दर्पण (दूसरी सदी) है । यह दोनों ग्रंथ नृत्य सिद्धान्तों को प्रस्तुत करते हैं । भारतीय नृत्य का एक व्याकरण (अनुशासन) है । प्रत्येक नृत्य रूप विभिन्न स्तरों पर एक संरचनात्मक प्रणाली है । उदाहरण के लिये नृत्य की न्यूनतम इकाइयाँ इस प्रकार हैं (1) स्थान (खड़े होने की स्थिति) (2) चारी (पद और टांग संचालन) (3) नृत्तहस्त (नृत्य की स्थिति में हस्त मुद्रायें) । इन सभी के संयोजन को करण कहा जाता है । करणों की संख्या 108 है, जिन्हें चिदंबरम नटराज मंदिर में मूर्त रूप में देखा जा सकता है ।

नृत्य या तो मार्गी होता है या देशी और यह दोनों श्रेणियाँ सभी कलाओं पर लागू होती हैं । मार्गी मानक, औपचारिक परंपरा है, देशी लोक तथा परिवर्तनशील परंपरा है । जैसा कि हमने देखा है नृत्य का दूसरा वर्गीकरण, विशेषता के आधार पर तांडव और लास्य है । तांडव एक प्रकार से प्रबल अभिव्यक्ति, अभिनय और भावों का प्रतीक है भले ही यह नृत्य पुरुष या महिला किसी के भी द्वारा किया जाय । दूसरी ओर लास्य में लालित्य, मृदुलता और शालीन मनोभावों के तत्त्व होते हैं । अन्य तत्वों के साथ-साथ नाट्य, नृत्य और नृत्त इन तीन मुख्य घटकों से शास्त्रीय नृत्य की रचना होती है । नाट्य और ड्रामा समान रूप हैं और नाट्य मंचीय प्रस्तुतीकरण का नाटकीय तत्व है । नृत्य में मनोभाव या रस और भाव के साथ मिलकर जो लयात्मक देह संचालन किया जाता है वही नृत्य है । लयात्मक अंग संचालन और पद संचालन नृत्त कहा जाता है । इस आधार पर नृत्य की तकनीक को दो स्पष्ट शीर्षों में श्रेणीबद्ध किया जा सकता है अर्थात् नृत्त और नृत्य । अभिनय या नाटकीय अभिव्यक्ति अर्थात् अंगिका (शारीरिक चेष्टा), वाचिका (वाणी से), आहार्य (पोशाक और शृंगार) और सात्विक (मनोदशा और भावों का शारीरिक प्रदर्शन) के माध्यम से रस और भाव दोनों को व्यक्त किया जाता है ।

2. Read the passage given below and answer the questions that follow : **5 × 2 = 10**

The first still available classical manual on dance is Bharata Muni's Nāṭyaśāstra (about 2nd century BCE). It gives a clear and detailed account of dance. After watching the first performance of drama, Nāṭyaśāstra narrates that Śiva wanted dance and dance movements to be made a part of drama, and for that the sage Taṇḍu was requested to compose and direct a dance. Taṇḍu taught dance movements – cārīs (foot and leg positions), maṇḍalas (circular movements), karaṇas (movements of hands) and aṅgāhāras (dance postures) – to Bharata Muni who made them part of the training of actors and dancers in a play. The dance came to be called tāṇḍava, a series of body postures that form the basic language of Indian dance.

After the Nāṭyaśāstra, another significant available work on dance is Nandikeśvar's Abhinaya Darpaṇa (2nd century CE). These two manuals present the principles of dance. Indian dance has a grammar. Each dance from is a system of structures at different levels. For instance, the minimal units in a dance are (1) sthāna, standing position; (2) cārī, foot and leg movements; (3) nṛttahasta, hands in a dancing position. A configuration of these constitutes a karaṇa. There are 108 karaṇas; one can see them sculptured at the Chidambaram Naṭarāja temple.

Dance is either mārgī or deśī, the two categories that apply to all arts. Mārgī is the standard, formal tradition; desi is folk, variable traditions. Another classification of dance, as we have noted, is tāṇḍava and lāsya in character. In one sense tāṇḍava stands for the vigorous expression and actions and feelings regardless whether the dance is performed by men or women. Lāsya, on the other hand, stands for elements of grace and softness and gentle emotions. There are three main components – nāṭya, nṛtya and nṛtta – which together with other elements make up the classical dance. Nāṭya corresponds to drama; it is the dramatic element of a stage performance. Nṛtya is the rhythmic movement of the body in dance combined with emotion or rasa and bhava. Nṛtta stands for rhythmic movements and steps. On this basis, the technique of dancing can be categorized under two clear heads, nṛtta and nṛtya. Both rasa and bhāva are conveyed through abhinaya or dramatic expression – āṅgika (gestures of the body), vācika (verbal), āhārya (costume and make-up) and sāttvika (physical manifestations of mental and emotional states) – which govern nāṭya.

उपर्युक्त अनुच्छेद के संदर्भ में नीचे दिये गये प्रश्नों का उत्तर दें : (प्रत्येक 2 अंक)

(i) लास्य और तांडव को स्पष्ट करें ।

(ii) नृत्य सिद्धांतों को बताने वाले ग्रंथों का उल्लेख करें ।

(iii) नृत्य में तण्डु की क्या भूमिका है ?

(iv) शास्त्रीय नृत्य के किन्हीं दो घटकों को स्पष्ट करें ।

(v) भाव कैसे व्यक्त किया जाता है ?

भाग – ख

नीचे दिए गए अनुच्छेद को पढ़ें और उसके नीचे दिए गए प्रश्नों का उत्तर दें : $2 \times 3 + 2 \times 2 = 10$

3. सामरिक कला (युद्ध की कला) माड्यूल के निम्नलिखित अनुच्छेद पर विचार करें :

आत्म रक्षा के लिये कलारिप्पयट्टु मात्र शारीरिक युद्ध नहीं है । यह एक संपूर्ण व्यक्तिगत विकास कार्यक्रम है जिसका उद्देश्य आत्मरक्षा के लिये अच्छे मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य का विकास करना और फुर्ती, प्रतिवर्ती क्रिया और कौशल को बढ़ाना है । कलारि प्रशिक्षण शरीर और मस्तिष्क दोनों का विषय है, जिसका लक्ष्य अपनी आक्रामक प्रवृत्तियों पर नियंत्रण पाना और अपनी कमियों (कुट्टम तिरक्कल) को दूर करना है । कलारि में प्रवीण वह है जो अपने असहाय विरोधी को चित कर सकने की स्थिति में भी अपनी इच्छा से अपने को रोक सके । कत्थकली जैसी कला में उन्नत प्रशिक्षण के लिये कलारिप्पयट्टु अधिकतर एक तैयारी होती थी । कलारिप्पयट्टु से प्राप्त ज्ञान अन्य विषयों के लिए अपेक्षित निपुण कौशल विकसित करने के लिये छात्रों को सक्षम बनायेगा । चिकित्सकों को कलारिप्पयट्टु में प्रशिक्षित करना भी एक आम बात थी । आयुर्वेद और कलारिप्पयट्टु की परंपराओं के बीच वास्तव में चिकित्सीय ज्ञान का अत्यधिक आदान-प्रदान होता रहा है विशेषकर मर्म, मालिश और आघात के मामलों में ।

उल्लेखनीय है कि कलारिप्पयट्टु पुरुषों तक ही सीमित नहीं था बल्कि प्रशिक्षण के लिये महिलाओं को भी भर्ती किया जाता था । लोकगाथाओं में निपुण महिला योद्धाओं की कहानियाँ मिलती हैं । केरल में कलारिप्पयट्टु स्कूल अभी भी विद्यमान हैं भले ही शारीरिक लड़ाई की इस प्राचीन प्रणाली की लोकप्रियता में कमी आती जा रही है । यह एक विडम्बना है कि कराटे और जूड़ों जैसे सामरिक कला के अन्य रूप कलारिप्पयट्टु की भूमि केरल में अधिक लोकप्रिय हो गये हैं । दूसरी ओर केरल के विभिन्न हिस्सों में आज भी मोच और खेल में होने वाली चोटों के लिये कलारि विशेषज्ञ चिकित्सा उपचार प्रदान करते हैं । खेलों के क्षेत्र में कलारिप्पयट्टु को बढ़ावा देने की काफी गुंजाइश है । इसको अपनाने से मिलने वाली महान शारीरिक क्षमता, फुर्ती और तीव्र प्रतिवर्ती क्रिया किसी भी प्रकार के खेलों में व्यक्ति को निपुण बना सकते हैं ।

Answer these questions in relation to above passage. (**2** marks each)

(i) Explain *lāsya* and tāṇḍ*ava*.

(ii) Name the manuals that describe the principles of dance.

(iii) What is the role of Taṇḍu in dance ?

(iv) Explain any two components of classical dance.

(v) How is bhāva conveyed ?

SECTION – B

Read the passage given below and answer the questions that follows :

2 × 3 + 2 × 2 = 10

3. Consider the following passage from the module on Martial Arts.

Kaḷarippayattu is not merely physical combat for self-defence. It is a complete personal development programme that aims to develop good physical and mental health and enhance agility, reflexes and skills for self-defence. The kaḷari training is a discipline for both body and mind, the goal being to gain control over one's aggressive tendencies and remove one's defects (kuttam thīrkkal). The master of kaḷari is one who can withdraw at will even when he can strike a helpless opponent. Often kaḷarippayattu was a preparation for advanced training in art forms like Kathakali. The flexibility gained from kaḷarippayattu would enable the student to develop the subtle skills required in other disciplines. It was also common for medical practitioners to train in kaḷarippayattu. In fact, there has been a vigorous exchange of medical knowledge, especially concerning marmas, massage and trauma management, between the traditions of Ayurveda and kaḷarippayattu.

Interestingly, kaḷarippayattu was not confined to men; women were also admitted for training and folklore tells stories of accomplished women warriors. Schools of kaḷarippayattu still exist in Kerala although the popularity of this ancient system of physical combat is on the decline. It is an irony that other martial art forms like karate and judo have become more popular in Kerala, the land of kaḷarippayattu. On the other hand, kaḷari experts offer medical treatments for sprains and sports injuries in different parts of Kerala even today. There is great scope for promoting kaḷarippayattu in the field of sports. The great flexibility of the body, agility and sharp reflexes that are developed through its practice can make an individual excel in any kind of sports.

4. शिक्षा मॉड्यूल के निम्नलिखित अनुच्छेद पर विचार करें :

भारतीय शिक्षा के उद्देश्य में व्यक्ति के आंतरिक और बाह्य दोनों रूप शामिल रहे हैं । सत्य, धैर्य, नियमितता, आत्म-संयम, नम्रता, आत्म-त्याग, सत्वशुद्धि, जीवन की महत्वपूर्ण एकता, प्रकृति और पर्यावरण को समझना, सभी का सम्मान भारतीय शिक्षा द्वारा पोषित आंतरिक नैतिक मूल्य थे । नव शिक्षार्थियों को पुरुषार्थ चतुष्टय (जीवन के चार लक्ष्य) अर्थात् धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की प्राप्ति का लक्ष्य लेकर जीवन जीने की शिक्षा दी जाती थी । व्यक्ति, परिवार और समाज के लिये आदर्श धर्म सिद्धान्त के अनुरूप अपने जीवन को ढालने की शिक्षा छात्रों को दी जाती थी । माता-पिता, अध्यापकों, समाज और देवताओं के प्रति अपना कर्तव्य निभाने के लिये छात्रों सहित सभी के लिये धर्म आवश्यक है ।

अनुशासन, इतिहास, वाद-विवाद कला, कानून, औषधि आदि में प्रवीणता के बाह्य लक्ष्य को भी अत्यधिक रूप से अपनाया गया परंतु ज्ञान प्राप्ति के इस बाह्य लक्ष्य को आंतरिक लक्ष्य से अलग नहीं किया जा सकता क्योंकि इस परंपरा में सभी ज्ञान नैतिक रूप से इसी से जुड़े हैं ।

शारीरिक शिक्षा महत्वपूर्ण थी और युद्ध कौशल प्राप्त करने के लिये छात्र क्रीड़ा (खेल, मनोरंजन क्रियाकलाप), विभिन्न व्यायामों (विभिन्न किस्म के शारीरिक अभ्यास), धनुर्वेद (धनुर्विद्या, तलवार चलाना आदि) और इन्द्रियों पर नियंत्रण के लिये योग साधना (प्राणायाम, आसन, नाड़ी शुद्धि आदि) में भाग लेते थे । भारतीय प्रणाली में परीक्षाओं के अलग-अलग रूप थे । छात्रों ने क्या सीखा है इसे प्रदर्शित करने के लिये उन्हें शास्त्रार्थ के अभ्यास में लगाया जाता था और वे अपनी स्थिति का बचाव करते थे । अग्रवर्ती छात्रों को अधिकतर नौसिखियों को पढ़ाने के लिये कहा जाता था और इस प्रक्रिया में वह कुछ बहु-उपयोगी शिक्षण अनुभव भी प्राप्त कर लेते थे ।

(i) "आत्मरक्षा के लिये कलारिप्पयट्टु मात्र एक शारीरिक युद्ध नहीं है ।" उपर्युक्त अनुच्छेद के परिप्रेक्ष्य में इस कथन की पुष्टि करें । **3**

(ii) प्राचीन भारत की शिक्षा के क्या उद्देश्य थे ? वर्तमान शिक्षा प्रणाली के उद्देश्यों से इसकी तुलना करें । **3**

(iii) वर्तमान शिक्षा प्रणाली किस प्रकार प्राचीन समय की प्रणाली से भिन्न है ? **2**

(iv) कलारिप्पयट्टु के अभ्यास से कोई व्यक्ति खेलों में कैसे प्रवीणता प्राप्त कर सकता है ? **2**

4. Consider the following passage from the module on Education.

Indian education aimed at both the inner and the outer dimension of a person. Truth, patience, regularity, self-mastery, humility, self-denial, purity of self (sattvaśuddhi), cognition of the underlying unity of life, nature and environment, reverence for all beings were the inner values cultivated by Indian education. Learners were taught to grow by pursuing the realization of puruśārtha catuṣṭaya (four ends of life), dharma (righteousness), artha (material well-being), kāma (enjoyment), and mokṣa (liberation from worldly ties). Pupils were trained to guide their life in consonance with dharma, the modelling principle for the individual, the family and the society. Dharma required all, including students, to perform their duties towards parents, teachers, people and gods.

The outer goal of mastering a discipline, history, art of debate, law, medicine etc., was also assiduously pursued but this 'outer goal' of gaining knowledge could not be divorced from the inner dimension as all knowledge in the tradition is ethically inflected.

Physical education was important and students participated in krīdā (games, recreational activities), vyāyāma prakāra (various types of exercises), dhanurveda (archery, sword play etc.) for acquiring martial skills, and yoga-sādhanā (prānāyāma, āsana, nāḍīśuddhi etc.) for developing control over the sense organs. Examinations had a different form in the Indian system. In order to demonstrate what they had learnt, students engaged in the exercise of learned debates (śāstrārtha) and defended their position. Advanced students were often called upon to teach beginners and in the process acquired some valuable teaching experience as well.

(i) "Kaḷarippayat͟t͟u is not merely physical combat for self-defence." Validate this statement in light of the above passage. **3**

(ii) What were the goals of education in ancient India ? Compare with the goals of current education system. **3**

(iii) How is present day examination system different from ancient times ? **2**

(iv) How can a person excel in sports by practicing Kaḷarippayat͟t͟u ? **2**

5. संबंधित मॉड्यूलों के अध्ययन से प्राप्त ज्ञान और अंतर्दृष्टि के संदर्भ में निम्नलिखित दो प्रश्नों में से **एक** प्रश्न का उत्तर (**300-400** शब्दों में) दें : **15**

(1) "भारत की कृषि आधारित अर्थव्यवस्था और सभ्यता रही है और इससे कृषि-पद्धतियों की एक दीर्घ, समृद्ध और विविधतापूर्ण परंपरा विकसित हुई ।" ऐसी महान और विविधतापूर्ण परंपरा की सफलता के कारणों को विस्तार में बतायें और आधुनिक पद्धतियों से इसकी तुलना करें ।

अथवा

(2) व्यक्ति को नीतिशास्त्र का वास्तविक ज्ञान प्राप्त होगा यदि वह नैतिक मूल्यों और धर्म का पालन करें और उन्हें आत्मसात करें । पारंपरिक और वर्तमान वातावरण के संदर्भ में अपने विचार व्यक्त करें ।

भाग – ग

6. निम्नलिखित **छ:** प्रश्नों में से **पाँच** प्रश्नों का संक्षेप में उत्तर (**30-40** शब्दों में) दें : **5 × 3 = 15**

I. लाठी खेला और सिलम्बम के बीच तुलना करें ।

II. ईंट बनाने की प्रौद्योगिकी को काफी प्राचीन क्यों माना जाता है ?

III. भाषा की विभिन्न विशेषताओं का वर्णन करें ।

IV. "बृहदारण्यक उपनिषद में हमें यह बताया गया है कि ज्ञान प्राप्ति के मार्ग के तीन चरण हैं ।" इन चरणों का स्पष्ट उल्लेख करें ।

V. अमरकोश में वर्णित विभिन्न प्रकार की भूमि क्या है ?

VI. आचारशास्त्र पर जोर देने वाले सिख धर्म के आधारभूत या मूल सदगुणों का उल्लेख करें ।

7. इन दस बहुविकल्पीय प्रश्नों का उत्तर दें (प्रत्येक 1 अंक) : **10 × 1 = 10**

I. जापानी और चीनी लोग अपनी लोकप्रिय युद्ध कलाओं, कराटे और कुंग-फू का स्रोत ________ में ढूँढते हैं ।

(a) श्रीलंका (b) भारत

(c) इंडोनेशिया (d) मिस्र

II. निम्नलिखित में से किस नृत्य में देवी दुर्गा और महिषासुर के बीच नकली युद्ध दिखाया जाता है ?

(a) डोल्लु कुनिथा (b) घूमर

(c) चौन्फला (d) डांडिया

5. Answer (in **300-400** words) **one** out of the following **two** questions, with relevance to the knowledge and insights gained through the study of the respective modules : **15**

(1) "India has been an agricultural economy and civilization and has evolved a long, rich and diverse tradition of agricultural practices." Elaborate on the reasons behind the success of such a great and diverse tradition and compare with modern day practices.

OR

(2) True knowledge of ethics would be attained if one practices and imbibes moral values and dharma. Present your views in line with traditional and contemporary setting.

SECTION – C

6. Answer briefly (in **30-40** words) **five** out of the following **six** questions :

5 × 3 = 15

I. Draw a comparison between Lāthi khela and silambam.

II. Why is the brick technology considered to be a very ancient one ?

III. Describe the various features of language.

IV. "In the Bṛhadāranyaka Upanishad we are told that the path to knowledge consists of three stages." Explain these stages.

V. What are the different types of land described in the Amarakoṣa ?

VI. Explain the cardinal virtues of Sikhism which emphasize ethics.

7. Answer these ten MCQs : (1 mark each). **10 × 1 = 10**

I. The Japanese and the Chinese trace the origins of their popular martial arts, karate and kung-fu, to ________.

(a) Sri Lanka (b) India

(c) Indonesia (d) Egypt

II. Which one of the following dance forms represents a mock fight between goddess Durga and Mahiśāsura ?

(a) Dollu Kunitha (b) Ghūmar

(c) Chauṅflā (d) Dāndiyā

III. मणिपुरी नृत्य भारतीय _____ नृत्य की एक मुख्य शैली है ।

(a) लोक (b) शास्त्रीय

(c) अर्ध-शास्त्रीय (d) आदिवासी

IV. निम्नलिखित में से किस ग्रंथ में अंगराग / शृंगार (कास्मेटिक्स) की विभिन्न वस्तुओं और सुगंधित केश तैल, वस्त्रों के इत्र आदि का उल्लेख किया गया है ?

(a) वृहत् संहिता (b) अर्थशास्त्र

(c) शिलाप्पदिकारम् (d) वाक्यपदीय

V. ग्रंथों में प्रयुक्त शब्दों के अर्थ के अध्ययन का विज्ञान (शास्त्र) _____ है ।

(a) वृहत् संहिता (b) निरुक्त

(c) निघण्टु (d) कृषिगीता

VI. निम्नलिखित विकल्पों में से किसने यह कहा था कि ज्ञान और भाषा एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं ?

(a) इलांगो अडिगल (b) वराहमिहिर

(c) कौटिल्य (d) भर्तृहरि

VII. समरांगणसूत्रधारा में स्थल परीक्षण, मृदा-विश्लेषण, मापन प्रणालियों, स्थपति (वास्तुकार) की अर्हताओं (योग्यता) की पद्धतियों का वर्णन किया गया है जिसके लेखक _____ हैं ।

(a) राष्ट्रकूट (b) अशोक

(c) कुषाण (d) राजा भोज

VIII. गार्गी, मैत्रेयी या लोपामुद्रा का उपनिषदों में अग्रणी _____ के रूप में उल्लेख किया गया है ।

(a) आचार्या (b) शास्त्रीय नृत्यांगना

(c) गायिका (d) चित्रकार

IX. तक्षशिला विश्वविद्यालय के विभिन्न स्कूलों में अनेक विषय पढ़ाये जाते थे । निम्नलिखित में से किस विषय पर विशेष ध्यान दिया जाता था ?

(a) हस्तशिल्प (b) मूर्तिकला

(c) चित्रकला (d) औषधि

X. नैतिकता की दृष्टि से निम्नलिखित में से कौन महत्वपूर्ण है जो मानव जीवन को सही दिशा और लक्ष्य प्रदान करता है ?

(a) अर्थ और काम (b) धर्म और मोक्ष

(c) काम और धर्म (d) मोक्ष और काम

III. Maṇipurī dance is one of the main styles of Indian _____ dance.

(a) folk (b) classical

(c) semi-classical (d) tribal

IV. In which one of the following texts are various items of cosmetics and perfumes like scented hair oil, perfume for clothes is described ?

(a) Bṛhat Saṁhitā (b) Arthaśāstra

(c) Shilappadikāram (d) Vakyapadiya

V. _____ is the science of study of the meaning of words used in texts.

(a) Bṛhat Saṁhitā (b) Nirukta

(c) Nighaṇṭu (d) Krishigita

VI. Who out of the following options, said that knowledge and language are interwoven ?

(a) Iḷaṅgō Adigaḷ (b) Varāhamihira

(c) Kautilya (d) Bharṭrhari

VII. Samarāṅgaṇasūtradhāra, discusses methods of examination of a site, analysis of the soil, systems of measurement, qualifications of the sthapati (architect) is authored by _____.

(a) Rāṣṭrakūṭa (b) Aśoka

(c) Kuṣāṇas (d) King Bhoja

VIII. Gargī, Maitreyī or Lopāmudrā, find mention in the Upaniṣads as leading _____.

(a) ācāryās (b) classical dancers

(c) singers (d) painters

IX. Taxila University's different schools taught many subjects. Which one of the following subjects was given special attention ?

(a) Handicrafts (b) Sculpture

(c) Painting (d) Medicine

X. Which one of the following is important from the ethical point of view, gives right direction and purpose to human life ?

(a) Artha and kāma (b) Dharma and mokṣa

(c) Kama and dharma (d) Mokṣa and kāma